Regional Institute of Education
LIBRARY
Bhopal

पंचम अध्याय

निष्कर्ष, सुझाव एवं भावी शोध हेतु सुझाव

पंचम अध्याय
निष्कर्ष, सुझाव एवं भावी शोध हेतु सुझाव

निष्कर्ष :–

स्वाध्यायकार्य (आध्यात्मिक प्रवृत्ति) एवं बिन स्वाध्यायकार्य (बिन आध्यात्मिक प्रवृत्ति) वाले कक्षा सात के बच्चो के व्यकित्व कारको, शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन का अध्ययन किया गया। इसमें निम्न प्रकार निष्कर्ष प्राप्त हुआ।

व्यकितत्व कारक 'ए' (गाम्भीर्य/बेधडक) में स्वाध्यायकार्य वाले एव बिन स्वाध्यायकार्य वाले विद्यार्थियों में सार्थक अन्तर पाया गया है। स्वाध्यायकार्य वाले विद्यार्थियों में 'गाम्भीर्य गुण' का ज्यादा प्रभुत्व पाया गया है और बिन स्वाध्यायकार्य वाले विद्यार्थियों में इस गुण का प्रभाव कम है।

व्यक्तित्व कारक 'बी' (बौद्धिक हिनता/बौद्धिक उच्चत्व) 'सी' (संवेगात्मक अस्थिरता/संवेगात्मक स्थिरता) 'डी' (भावशून्य/उत्तेजित) ई (विनम्र/उत्साही) 'एफ' (संयमी/आवेगपूर्ण) ''जी'' (निजहित साधक /कर्तव्यनिष्ठ) 'एच' (संकोची/साहसी) 'आई' (दृढ़ता/संवेदनशील) 'जे' (उत्साही/सतर्क) 'एन' (निष्कपट/समझदार) 'ओ' (शांतप्रिय/आशंकायुक्त) 'क्यू–3' (असंयमित/संयमित) 'क्यू–4' (आनन्दमय /तनावपूर्ण) में सार्थक अन्तर पाया नहीं गया। दोनों समुह के विद्यार्थियों ने समान अंक प्राप्त किये। इसलिये दोनों समुह में समानता पायी गई है।

स्वाध्यायकार्य (आध्यात्मिक प्रवृत्ति) एवं बिन स्वाध्यायकार्य (बिन आध्यात्मिक प्रवृत्ति) वाले बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः स्पष्ट होता है की स्वाध्यायकार्य का बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पाया गया ।

स्वाध्यायकार्य (आध्यात्मिक प्रवृत्ति) एवं बिन स्वाध्यायकार्य (बिन आध्यात्मिक प्रवृत्ति) वाले विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया। इससे स्पष्ट होता है की स्वाध्यायकार्य का बच्चों के समायोजन पर प्रभाव पाया गया।

सुझाव

- विद्यालय में विद्यार्थियों को स्वाध्यायकार्य की बालसंस्कार प्रवृत्ति से अवगत करना चाहिए। ताकि इस प्रवृत्ति के बारे में ज्ञान प्राप्त करे, और उसको समझ सके ।
- विद्यालय में स्वाध्यायकार्य के विचारों से विद्यार्थियों को अवगत करना चाहिए ताकि विद्यार्थियों में विचारशक्ति का विकास हो सके, और उन्नत जीवन दृष्टिकोण के बारे में सोच सकें।
- विद्यार्थियों को ऐसी प्रवृत्ति द्वारा शिक्षा देनी चाहिए ताकि उसमें नैतिकता, मूल्य, संस्कृति सर्वधन, संरक्षण आदि के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सके।
- विद्यालयों में ऐसी प्रवृत्ति को अभ्यास के साथ विद्यार्थियों को करवानी चाहिए। ताकि उसका सर्वागीण विकास हो सके ।
- स्वाध्यायकार्य बालसंस्कार केन्द्र में जो महान चरित्रों की कहानिया सुनाई जाती है, उसको विद्यालयों में विद्यार्थियों को सुनानी चाहिये।
- विद्यालय में ऐसी प्रवृत्ति द्वारा अलग अलग खेलों का आयोजन करना चाहिए और बच्चों को उसी भावना से शामिल हो सके ऐसा कार्यक्रम बनाना चाहिए। ताकि विद्यार्थियों में संघशक्ति, प्रेम, उत्साह भातृभाव, परसम्मान, पराक्रम, वीरता आदि गुणों का विकास हो सके। प्रारंभिक विद्यालयों में बालसंस्कार केन्द्र की जो प्रवृत्तियाँ और विचार है, उसको पाठ्यक्रम में अपनाने से बच्चो में कर्तव्यनिष्ठ, परसम्मान, कृतज्ञता, भाव, प्रेम, समपर्ण, अस्मिता, तेजस्विता आदि उत्तम गुणों का विकास होगा।
- प्रारंभिक विद्यालयों के बच्चों को स्वाध्यायकार्य के बालसंस्कार प्रवृत्ति के कार्यक्रम है, उसमें अनिवार्य रीति से शामिल करना चाहिए। ताकि उनमें

उत्तम दृष्टिकोण का विकास हो सके और भावि जीवन को उन्नत बना सके।

भविष्य शोध हेतु सुझाव :–

- स्वाध्यायकार्य (आध्यात्मिक प्रवृत्ति) का बच्चो के सृजनात्मक पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- स्वाध्यायकार्य का बच्चों के अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- स्वाध्यायकार्य का बच्चों के मूल्यों के बारे में विकास का अध्ययन करना।
- स्वाध्यायकार्य (आध्यात्मिक प्रवृत्ति) का बच्चों के व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- स्वाध्यायकार्य के बच्चो में व्यक्ति, कुटुम्ब, समाज, देश, विश्व के बारे में दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
- स्वाध्यायकार्य का बच्चों के नैतिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- स्वाध्यायकार्य का बच्चों की विचारशक्ति, बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन ——.